2

बुद्धि का बल

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धि-बल को श्रेष्ठ बताया है। लेखक का कहना है कि जो कार्य शारीरिक बल के प्रयोग करने से नहीं किए जा सकते, वे कार्य बुद्धि का प्रयोग करने से आसानी से पूर्ण हो जाते हैं।

रोहन ने दादी से कहा, "दादी माँ, आज आप मुझे कौन-सी कहानी सुनाएँगी?" दादी मुस्कराते हुए बोलीं, "सुनो बेटा, आज मैं आपको एक ऐसी कहानी सुनाती हूँ, जिसे सुनकर आपकी समझ में आ जाएगा कि संसार में शारीरिक बल से अधिक महत्त्वपूर्ण बुद्धि का बल है। इससे बड़ी-से-बड़ी कठिनाई का भी हल निकाला जा सकता है और बड़े-से-बड़े प्रभावशाली व्यक्ति को पराजित किया जा सकता है। बुद्धि के बल से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।" रोहन बोला, "दादी माँ, अब मेरी समझ में आया कि 'अक्ल बड़ी या भैंस' मुहावरे का अर्थ है–बुद्धि शारीरिक बल से बड़ी होती है। दादी माँ, अब आप जल्दी से कहानी सुनाइए।"

दादी बोलीं, "सुनो! प्राचीनकाल में एक राजा भोज थे। वे विद्वानों का आदर करते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत प्रसन्न थी। एक बार राजा भोज के दरबार में मंत्रीगण एवं अन्य विद्वान उपस्थित थे। तभी एक द्वारपाल वहाँ आया। उसने अभिवादन किया और राजा को बताया कि एक बालक द्वार पर खड़ा है। वह आपसे मिलना चाहता है। राजा ने द्वारपाल से कहा, "जाओ, उसको अंदर भेज दो।" बालक अंदर आ गया। उसने राजा को नमस्कार किया और बोला, "हे राजन! मैं कुछ प्रश्नों का उत्तर जानना चाहता हूँ। आपके दरबार में कई विद्वान पुरुष हैं। मुझे आशा है कि मेरे प्रश्न का उत्तर अवश्य मिल जाएगा।"

शिक्षण-संकेत

- पाठ पढ़ाने से पहले बच्चों को बुद्धि-बल के विषय में उदाहरण देकर विस्तार से बताएँ।

राजा भोज को प्रश्न जानने की बहुत उत्सुकता थी। उन्होंने बालक से कहा, "तुम निश्चिंत होकर अपना प्रश्न पूछो।"

बालक ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरा प्रश्न है–बुद्धि कहाँ रहती है?" सभा में उपस्थित कोई भी व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया। राजा ने मंत्री से इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहा। मंत्री ने उत्तर देने के लिए एक दिन का समय माँगा।

राजा ने बालक को अतिथिगृह में ठहरा दिया। मंत्री रात्रि में चुपके से अतिथिगृह में पहुँच गया। उसने बालक को एक हज़ार स्वर्ण–मुद्राएँ देने का वचन दिया। बालक ने मंत्री को उत्तर बता दिया।

अगले दिन राजा, बालक एवं सभी विद्वान राजसभा में उपस्थित थे। राजा ने मंत्री से कहा, "मंत्री जी, उत्तर दीजिए।" मंत्री बोला, "हे राजन्! बुद्धि श्रेष्ठ व्यक्ति में रहती है।" बालक इस उत्तर से संतुष्ट हो गया। उसने उत्साहपूर्वक दूसरा प्रश्न पूछा, "बुद्धि क्या खाती है?" राजा समेत सभी विद्वान प्रश्न सुनकर चकरा गए। उन्हें उत्तर नहीं सूझा। राजा ने पुनः मंत्री से उत्तर देने के लिए कहा। मंत्री ने बालक से एक दिन का समय फिर माँग लिया। पहले की तरह मध्य रात्रि में मंत्री बालक के पास अतिथिगृह में पहुँच गया। उसने बालक को एक हज़ार स्वर्ण–मुद्राएँ देकर उत्तर जान लिया।

दूसरे दिन राजसभा में बहुत लोग एकत्रित थे। बच्चे ने अपना प्रश्न दोहराया। मंत्री जी ने उत्तर दिया–"बुद्धि अज्ञानता खाती है।" सभा में उपस्थित सभी लोग मंत्री की प्रशंसा करने लगे। बालक इस बार भी उत्तर से संतुष्ट हो गया।

उसने राजा से अगला प्रश्न पूछने की अनुमति माँगी। राजा ने कहा–"बालक, तुम प्रश्न पूछ सकते हो, लेकिन यह तुम्हारा अंतिम प्रश्न होना चाहिए।" बालक इस बात पर सहमत हो गया। उसने अंतिम प्रश्न पूछा।

"बुद्धि क्या करती है?" सभी विद्वानों ने अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दिए। किसी ने कहा–"बुद्धि सब चीज़ें प्राप्त कर सकती है। "कोई बोला–"बुद्धि मनुष्य को विजय दिलाती है।" बालक ने सभी के उत्तर सुने, लेकिन उसने किसी के उत्तर को स्वीकार नहीं किया।

मंत्री ने बालक से कहा, "हे बालक! इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक दिन का समय दो।" बालक इस बात से सहमत हो गया। मंत्री ने पूर्व की भाँति बालक से प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयास किया। इस बार बालक ने यह माँग अस्वीकार कर दी।

अगले दिन मंत्री जी एवं सभी सभासद राज दरबार में उपस्थित हुए। राजा भोज ने मंत्री से कहा, "आप तो बुद्धिमान हैं, प्रश्न का उत्तर दीजिए।" मंत्री मुँह लटकाए खड़ा रहा। राजा ने बालक से कहा, "बालक, तुम ही इस प्रश्न का उत्तर दो।" बालक ने मुस्कराते हुए कहा, "इसका मतलब आप मानते हैं कि मैं बुद्धिमान हूँ।" राजा ने हँसते हुए कहा–"निस्संदेह तुम हम सबसे बुद्धिमान हो।"

बालक नम्रतापूर्वक राजा से बोला, "महाराज, पहले आप राजसिंहासन से नीचे उतर आइए, फिर मैं प्रश्न का उत्तर दूँगा।" राजा भोज बालक की बात को समझ नहीं पाए। प्रश्न का उत्तर जानने की उत्सुकता में वे सिंहासन से उतर आए। बालक तुरंत आगे बढ़ा और कूदकर सिंहासन पर बैठ गया।

वह सभी उपस्थित जनों को मुस्कराते हुए देख रहा था। तभी महामंत्री ने झुँझलाते हुए कहा, "बालक, देख क्या रहे हो? शीघ्र ही प्रश्न का उत्तर बताओ।"

बालक ने शांत स्वभाव से कहा, "आपका उत्तर आपके सामने है।" राजा भोज ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "बालक, तुमने तो उत्तर दिया ही नहीं। फिर हमारी समझ में कैसे आएगा?"

बालक ने विनम्रतापूर्वक कहा, "हे राजन! बुद्धि के बल से ही मैं राजसिंहासन पर बैठ गया और आप राजसिंहासन से उतर गए।" इतना कहकर वह सिंहासन से नीचे उतर आया। राजा ने बालक को गले से लगा लिया और उसके बुद्धि-बल की प्रशंसा की। राजा को बालक ने बताया कि वह निर्धन है, इसलिए विद्यालय में पढ़ने नहीं जाता है।

राजा भोज ने बालक की व्यथा सुनी तो उनका मन करुणा से भर गया। उन्होंने तुरंत महामंत्री को आदेश दिया कि राज्य की ओर से इस बालक के पढ़ने की व्यवस्था की जाए। साथ ही राज्य के अन्य निर्धन बालकों को भी विद्यालय भेजने का प्रबंध किया जाए। राजा भोज की उदारता देखकर सभी उपस्थित जन जय-जयकार करने लगे।

कहानी सुनकर रोहन बोला, "दादी माँ, आपको इतनी अच्छी-अच्छी कहानियाँ कैसे याद हुईं?" दादी बोलीं, "बेटा, बचपन में हर बच्चा अपनी दादी और नानी से कहानियाँ सुनता है और बड़ा होकर वह छोटे बच्चों को ये कहानियाँ सुनाता है। यह प्रथा वर्षों से चली आ रही है।" रोहन बोला, "अच्छा दादी माँ, कल के लिए कोई नई कहानी याद रखना। अब मैं सोने जाता हूँ।"

शिक्षा कहानियाँ ज्ञान-वृद्धि करती हैं।

शब्द-पोटली

महत्त्वपूर्ण	– आवश्यक	पूर्व	– पहले	बल	– ताकत
विद्वान	– ज्ञानी पुरुष	भाँति	– तरह	शीघ्र	– जल्दी
निर्धन	– गरीब	करुण	– दयनीय	श्रेष्ठ	– अच्छा
अतिथिगृह	– मेहमानों के रुकने का घर	अवश्य	– ज़रूर	उपस्थित	– मौज़ूद

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

मौखिक

(क) दादी ने कौन-से राजा की कहानी सुनाई?

(ख) राजा भोज से मिलना कौन चाहता था?

(ग) बालक ने कितने प्रश्न पूछे?

(घ) मंत्री प्रश्न के उत्तर जानने के लिए बालक को कितनी स्वर्ण-मुद्राएँ देता था?

लिखित

(क) "अक्ल बड़ी या भैंस" मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

_____

(ख) राजा ने बालक को गले से क्यों लगा लिया?

_____

(ग) पहले प्रश्न का उत्तर मंत्री ने क्या दिया?

_____

(घ) अंतिम प्रश्न का उत्तर बालक ने कैसे दिया?

_____

2. सही विकल्प पर ✓ लगाइए:

(क) रोहन को क्या सुनने का शौक था?

कहानियाँ ☐ गाने ☐ चुटकुले ☐ गीत ☐

(ख) रोहन को कहानी कौन सुनाती थी?

माँ ☐ दादी ☐ मौसी ☐ बहन ☐

(ग) राजा भोज विद्वानों का क्या करते थे?

अपमान ☐ देश-निकाला ☐ आदर ☐ सभी गलत ☐

(घ) राजा भोज से मिलने कौन आया था?

बालक ☐ भिखारी ☐ पंडित ☐ बूढ़ा ☐

(ङ) दरबार में सबसे बड़ा विद्वान कौन निकला?

मंत्री ☐ बालक ☐ राजा ☐ कोई नहीं ☐

3. रिक्त स्थान भरिए:

(क) बुद्धि के _____ से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

(ख) राजा भोज को प्रश्न जानने की बहुत _____ थी।

(ग) राजा ने बालक को _____ में ठहरा दिया।

(घ) बालक तुरंत आगे बड़ा और कूदकर _____ पर बैठ गया।

4. ऐसा किसने, किससे कहा?

वाक्य	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "अब आप जल्दी से कहानी सुनाइए।"	_____	_____
(ख) "जाओ, उसे अंदर भेज दो।"	_____	_____
(ग) "हे राजन्, बुद्धि श्रेष्ठ व्यक्ति में रहती है।"	_____	_____
(घ) "आप तो बुद्धिमान हैं, प्रश्न का उत्तर दीजिए।"	_____	_____
(ङ) "आपका उत्तर आपके सामने है।"	_____	_____

भाषा बोध

1. लिंग बदलकर लिखिए:

दादी _____ बेटा _____ राजा _____

पुरुष _____ बालक _____ माँ _____

2. निम्नलिखित मूल शब्दों के साथ 'ता' प्रत्यय जोड़िए:

अज्ञान + _____ = _____ महान + _____ = _____

मूर्ख + _____ = _____ सभ्य + _____ = _____

उत्सुक + _____ = _____ विनम्र + _____ = _____

प्रधान + _____ = _____ उदार + _____ = _____

3. दिए गए वर्णों को मिलाकर लिखिए:

(क) उ + त् + स् + उ + क् + अ + त् + आ = _____

(ख) न् + अ + म् + अ + स् + क् + आ + र् + अ = _____

(ग) भ् + ओ + ज् + अ = _____

(घ) म् + अं + त् + र् + ई = _____

(ङ) म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ = _____

4. कहानी में से पाँच संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए:

_____ _____ _____ _____ _____

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

शारीरिक	महत्त्वपूर्ण	मंत्रीगण	द्वारपाल
अतिथिगृह	संतुष्ट	बुद्धिमान	उत्सुकता

क्रियात्मक कार्य

- बुद्धि का सही तरह से उपयोग करने पर हमें क्या-क्या लाभ होते हैं? इस विषय पर सोचकर एक अनुच्छेद के रूप में अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

- बालक अपनी बुद्धि के बल से सिंहासन पर बैठ गया। जबकि नियम यह होता है कि जो सिंहासन पर बैठा है, वही राजा है। अतः वह बालक अपने को राजा समझकर राजा भोज के विरुद्ध क्या आदेश दे सकता था?
- आप भी पाठ से संबंधित कुछ प्रश्नों का निर्माण कीजिए।

मूल्यपरक प्रश्न (VBQ)

- 'अक्ल बड़ी या भैंस' यह मुहावरा कहाँ तक चरित्रार्थ होता है? सोचकर बताइए।

जीवन कौशल (Life SKill)

- अपने जीवन में आप सभी कार्य बुद्धि से करें, क्योंकि बुद्धि को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। बुद्धि के प्रयोग से ही कार्य करने पर सफलता प्राप्त होती है।